NOVATEUR PUBLICATIONS
JournalNX-A Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN No:2581-4230
VOLUME 6, ISSUE 8, Aug. -2020

Dr.Lajvanti
Deptt. of Hindi

हरिशंकर आदेश की सप्तशतियों में परिलक्षित पशु–पक्षियों के प्रति प्रेम

Abstract

प्रेम जीवन और जगत में व्याप्त मानवीय अनुभूतियों का चित्रण है । मनुष्य सामाजिक प्राणी है जिसके हृदय पक्ष में निरन्तर कोई न कोई भाव विद्यमान रहता है । प्रेम मानव की आदि एवं चिरतंन भावना है । मानव जीवन का मूलाधार प्रेम ही है। ढाई आखर प्रेम का पढै सो पंडित होय' से ही व्यापकता का ज्ञान बोध होता है । प्रेम मानव सृष्टि में भावात्मक व रागात्मक संबंधों के साथ ही ज्ञान एवं बोध का आश्रय लेकर विभिन्न रूप धारण कर लेता है । प्रकृति में पेड़–पौधों की तरह पशु–पक्षियों का भी महत्वपूर्ण स्थान है । वन–उपवन में विचरण करने वाले पशु–पक्षी है । पशु–पक्षी, जीव–जन्तु के अन्तर्गत आते हैं । आदेश जी का पशु–पक्षियों के प्रति विशेष लगाव रहा है जो उनकी कृतियों में सर्वत्र परिलक्षित होता है।

Introduction

आदेश जी ने अपनी कृति 'लहरों का संगीत' में जीवन के निरन्तर गतिमान पक्ष को उजागर करते हुए मानव को सतत् प्रयास करने की प्रेरणा देते हुए लिखा है –

"पशु–पक्षी ग्रह को आते हैं

मधुर गीत तारक आते हैं,

श्वासों को पगडंडी पर थक,

रूक–रूक कर जीवन चलता है ।"

आदेश की कविता में भावों को अतल गहराई एवं संवेदना का अप्रतिम स्वरूप है । कवि ने दो वस्तुओं की तुलना करते हुए समान धर्मी होने के कारण भी एक वस्तु को प्रिय तथा दूसरे को अप्रिय मानने के कारण स्पष्ट करने का प्रयास करते हुए लिखा है–

"तोडते शूल पर गुलों को मना करते हो ।

पालते काक बुलबुलों को मना करते हो ।

द्राक्षा, अख चूसते हो । किन्तु रस है निषिद्ध,

गुड़ तो खाते हो । गुलगुलों को मना करते हो ।।"

कवि ने रामराज्य की कल्पना करते हुए आनंदानुभूति को इस प्रकार व्यक्त किया है –

"पशु–पक्षी सब मोद मनाते

हैं, यूँ पुलकित होकर ।

राम–राज्य में रहते ज्यूँ,

जन–गण आनन्दित होकर ।।"

कवि ने रामराज्य का वर्णन करते हुए स्पष्ट किया है कि प्रत्येक नागरिक के मन में आनन्द की लहर दौड़ती थी । ठीक उसी प्रकार पशु–पक्षी भी सौन्दर्य को देखकर पुलकित हो उठते हैं ।

आदेश ने 'शकुन्तला' कृति में दिवस के आगमन पर प्रकृति के परिवर्तनों एवं जीव–जन्तु के क्रिया कलापों को अभिव्यक्त करते हुए लिखा है –

"सौ गए हैं श्वान, स्यार, उलूक सारे ।

जागृति देते जिन्हें थे, मूक तारे ।
जग गए तमचुर, लिए नूतन तराने ।।"

कवि ने नारी–सौन्दर्य की अभिव्यक्ति के लिए जीव–जन्तुओं को आधार रूप में ग्रहण किया है –

"शावक से शैशव लेकर,
भृंगों से ले चंचलता ।
मत्स्याओं से आकृति ले,
हँसती भी चपल सरलता ।।"

'प्रश्न' कविता में आदेश जी ने प्रकृति के नियमों को स्पष्ट करते हुए लिखा है जिस प्रकार मानव की सन्तान मानव होती है ठीक उसी प्रकार पशु की सन्तान पशु ही कहलाती है –

"जबकि
पशु का शिशु
सदा ही पशु कहता,
और,
जब सन्तान मानव की
कहती है मनुज ही ।।"

आदेश जी की कविताओं में जीवन–अनुभव और दृढ़ निश्चय का भाव सर्वत्र विद्यमान हैं । कवि ने अपने अनुभवों के आधार पर मानव के बहकते कदमों को रोकते हुए उनका दिशा–निर्देश किया है–

"जब भरी नाभि में कस्तूरी,
ओं हरिण, भटकता क्यों चहुँदिशि?
क्यों व्यर्थ व्यथित हो तृष्णा से,
रहता उदास तू वासर निशि?

कर एक ब्रह्म का आराधन,

तू द्वैतवाद से काम न ले ।।"

'शकुन्तला' कृति में आदेश जी ने शकुन्तला के बचपन के मित्रों का वर्णन मनोहारी रूप में प्रस्तुत किया है –

"ये भिन्न–भिन्न के पादप और लताएँ ।

ये धेनु–वत्स, मृग–शावक, वन–वनिताएँ ।

ये शुक–सारिका, कपोत, कोकिला खग–दल ।

है परम मित्र शैशव–सहचर सरिताएँ ।।"

उपर्युक्त पंक्तियों में कवि ने शकुन्तला के जीव–जन्तुओं के प्रति लगाव को अभिव्यक्ति दी है ।

शकुन्तला दुष्यन्त से अपने परम मित्रों–गाय, मृग, तोता, कबूतर और कोयल आदि के बारे में बताती है ।

कवि ने मानव मन की कल्पनाओं की तुलना पक्षी से करते हुए हृदयगतही रूप प्रस्तुत किया है –

"प्राण कहते हैं

उड़ चलो,

दूर उड़ती हुई उन आबाबीलों की तरह

पर पंख कहाँ हैं?

हमसे अच्छे तो यह पक्षी हैं ।

मन चीत्कार करता है

साँसे उफनती हैं ।"

प्रो० हरिशंकर आदेश की कविताओं में जीव–जन्तुओं के प्रति आकर्षण स्पष्ट झलकता है । उन्होंने अपनी कविता 'समय का कुत्ता' में इस संसार को पागल कुत्तों की बस्ती बताते हुए लिखा है –

"जग पागल कुत्तों की बस्ती ।
पशुता ही है, जिसमें हँसती ।
धन–बल का मद छाया सब पर
बिकती है नैतिकता सस्ती ।।"

चातक जिस तरह मिलन–मल्हार गाता रहता है, ठीक उसी प्रकार चातक को माध्यम बनाकर आदेश जी ने मुमताज के भावों को अभिव्यक्ति प्रदान की है –

"प्रिय चातक के स्वर में मिलकर
गाऊँगी मैं मिल–मल्हार ।
दूर क्षितिज में नभ बन करने,
आऊँगी धरती को प्यार ।

आदेश जी ने तितली का वर्णन करते हुए कहा है कि तितली वन–उपवन में जहाँ भी जाती है हर किसी के मन को मोह लेती है–

"तितली! तितली! मनहर तितली!
उड़ती फिरती मचली–मचली ।।
वन–वन उपवन–उपवन जाकर,
रास रचाती रह–रह तितली ।।"

आदेश जी की अधिकांश कविताओं में जीव–जन्तुओं की प्रति लगाव स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है –

"चींटी के पर उग आये,
खुडखुडुआ बटिये की दौड़ा ।
मांदो में सोये शेरों की,
करने को आया घोड़ा ।।"

संसार में सभी के कर्म और स्थान निश्चित होते हैं । कोई किसी की जगह नहीं ले सकता है इसी बात को दर्शाते हुए आदेश जी ने लिखा है कि प्रत्येक जीव–जन्तु का अपना अलग स्वरूप होता है –

"सिंह न बनता भेडिया, गर्दभ
बने न अश्व ।
दीर्घ दीर्घ रहता सदा, ह्रस्व सदा हो ह्रस्व ।।"

'निर्मल सप्तशती' में कवि ने नारी के सौन्दर्य की उपमा शुक्र और मीन से देते हुए कहा है –

"तोते जैसी नासिका, लोचन मानो मीन ।
क्यारी ज्यूं आरुण्य की, मुख पर खिली अदीन ।।"

महाकवि आदेश ने मकड़ी के माध्यम से अपने भावों को सशक्तता प्रदान की है । उन्होंने कहा है कि जिस प्रकार मकड़ी निरन्तर गिरती व चढ़ती रहती है । फिर भी धैर्य का त्याग नहीं करती । ठीक उसी प्रकार मानव को भी निरन्तर प्रयत्नशील रहना चाहिए –

"चढ़ती–गिरती, कभी फिसलती,
अपना साहस कभी न तजती,
गिर–गिर कर उठ जाती मकड़ी ।।"

राष्ट्रीय भावना में बहकर कवि देशों में क्रांति लाने की अभिलाषा करता है । चारों और फैले विषाक्त वातावरण को सरल तथा सहज बनाकर प्रेम–संचार कर सभी को आंदोलित करना चाहता है । वह सिंह के माध्यम से मनुष्य को क्रांति के लिए उद्वेलित करता है –

"मुझे न चाहिए आज लता की मंजु ।
मुझे न आज चाहिए मुकेश के से गान ।
मुझे तो आज सिंह सी हुंकार चाहिए ।।"

सहृदय कवि को विविध कृतियों में जीव–जंतुक के प्रति प्रेमभाव के दर्शन होते हैं । प्रो० आदेश के साहित्य में जीव–जंतुक की बहुरंगी उपस्थिति में जहाँ प्राणि प्रेम की तरलता दिखाई देती है वहीं भाव–प्रवणता और अभिव्यक्ति को स्पष्टता प्राप्त होती है ।

(घ) देशीय, भाषिक, सांस्कृतिक, धार्मिक – प्रो० आदेश के काव्य में भारत देश के प्रति अटूट श्रद्धा भाव है । उनकी सभी कृतियों में देश–प्रेम की पावन सरिता बहती है । उन्होंने भारतमाता को एक कृति समर्पित की है ।

इसका मूल स्वर है – "भारत देश को प्रणाम ।"

'प्रवासी की पाती : भारतमाता के नाम' में महाकवि ने भारतभूमि की बहुविधि अर्चना की है –

"अमरनाथ से रामेश्वर तक,
सोमनाथ से भुवनेश्वर तक ।
मेघालय–बंगाल–चेन्नई,
अडंमान–गोवा–परिसर तक
शस्य श्यामला प्राणदायिनी
पुण्य भूमि जय है ।"

कवि देश की मिट्टी को शत–शत प्रणाम करता हुआ, बार–बार और अनेक बार याद करता है । इस मिट्टी में जन्मे महापुरुषों, नायकों और आदर्श पुरुषों को याद कर उनमें प्रेरणा शक्ति अपना कर आगे बढ़ना चाहता है –

"जिसकी मिट्टी भी है चाँदी,
पैदा होते जिसमें गाँधी,
अमन देवता वीर जवाहर जहाँ जन्म पाता ।

सिर पर तेरे खड़ा हिमालय, निशदिन गुण गाता ।।"

महाकवि भारत और भारती की जय–जयकार करता हुआ तृप्त ही नहीं होता है । वह तो बहुविधि चर्चा करता है, भावान्दोलित हो कर नतमस्तक होता है और इस धरती पर जन्में सच्चे सपूतों को याद कर धन्य होता जाता है । भारतभूमि पर जन्में, मानव मूल्यों के संरक्षक साहित्यकारों को याद करता हुआ कवि कहता है–

"कबीर तुलसीदास गोसाईं
नानक सूर, चन्द्ररबरदाई ।
पदमाकर, रसखान जायसी,
रवीन्द्र, गालिब, मीराबाई ।
प्रसाद पन्त महादेवी की
वाणी जिसे दुलारती ।।
जय भारत! जय भारती ।।"

सहृदय कवि की लेखनी से भारतीय परिवेश को तरह बनाकर तारने वाली गंगा, संगीत से संगीतमय बनाने वाले झरने, मुस्कराने की शिक्षा देने वाले खिलते फूलों, मानवों को मुस्कराने के लिए बाध्य करने वाले नाचते मयूरों का मनोहारी चित्रण किया गया है । ज्ञान गंगा–वेद और मानवता के पाठ पढ़ाने वाले राम और कृष्ण का अभिनंदन और प्रणाम करता हुआ कवि कितना प्रसन्न है –

"धर्म भूमि हैं, कर्मभूमि हैं
राम कृष्ण की पुण्य भूमि है
दयानन्द गाँधी–नेहरू की
प्राणाधिक प्रिय जन्मभूमि हैं ।
यही वेद की बहती सुरसरि

तीनों ही जग तारती ।।

सच्चे मन से आज उतारें

अम्बे! तुम्हारी आरती ।।"

प्रो० हरिशंकर 'आदेश' के चर्चित महाकाव्य 'शकुन्तला' में जहां शकुन्तला में नई चेतना और नए भावों का संचार किया गया है, वहीं देश–प्रेम की अनूठी भावना को प्रतिपादित किया गया है । स्वार्थ और अहं के बन्धन से मुक्त हो मनुष्य जब समाज की उन्नति की बात सोचता है तब विकास का मार्ग खुलता है । महाकवि ने देश की उन्नति के लिए प्रत्येक बन्धन को तोड़ कर आगे बढ़ने का आहवान किया है –

"हर व्यक्ति, समाज, संस्कृति, जाति,

धर्म से राष्ट्र बड़ा होता ।

राष्ट्रोत्थान या राष्ट्रपतन से

सर्वहित या अनहित होता ।"

कवि उस देश पर न्यौछावर होने के लिए तत्पर दिखाई देता है जिसकी धूल में लोट–लोट कर बड़े होने का अवसर पाया है, जहां की वायु में साँस लेकर जीवन पाया है। उसके लिए विश्व की सबसे प्यारी चीज उसका देश है –

"मेरा देश! मेरा देश!

सबसे सुन्दर मेरा देश!

इस पर सौ–सौ स्वर्ग–निसार,

प्राणों से भी प्यारा देश ।।"

प्रो० आदेश के साहित्य में यत्र–तत्र सर्वत्र ही देश प्रेम का भाव झलकता है, वह चाहे शृंगार रस हो अथवा वीर रस । भक्ति और शान्त रसों के परिपाक में तो कवि का मन बार–बार भारतीय परिवेश, भारतीय

आदर्शों और संस्कारों से अनुप्राणित होता दिखाई देता है । प्रेम और श्रृंगार के मधुर प्रसंगों से गतिशील 'अनुराग' महाकाव्य में देश–प्रेम का मनभावन रूप दिखाई देता है –

"रूप–भारत भाल पर,
हिमगिरी खड़ा अभिमान से ।
विश्व को देता चुनौती,
अतुल छवि के गान से ।।"

कृषि प्रधान भारत की खुशहाली कृषकों के सुखद जीवन से सम्भव है । यही कारण है कि कवि उनकी प्रसन्नता की कामना करता है । उसके मन में किसान और जवान के लिए प्रेरक आदर भाव है । कवि के अनुसार भारत देश के किसान और देश के प्रहरी जवान दोनों पूजनीय है । उसकी कामना है कि उसकी मृत्यु के पश्चात् उसकी राख को कृषकों और देश भक्तों के मार्ग में डालीजाय जिस पर देश को गर्व है –

"अथवा किसी
कृषक के खेतों
में जाकर बिखराना ।
देश भक्त पथिकों
के पथ में
अथवा उसे बिछाना ।।"

धनुर्धारी राम और अर्जुन, चक्रसुदर्शन भगवान कृष्ण की धरती पर आतंकवाद पसर रहा हो, सीमा पर नापाक कदम बढ़ा रहे हों, तब सहृदय कवि की लेखनी आग उगलने के लिए विवश हो जाती है। तब वह हर मन में राम को जगाने का प्रयत्न करता दिखाई देता है –

"बढ़ते देख चरण रावण के
मानवता की भूमि पर,
सीमा–सीता आज विकल हो
टेर रही है, राम को ।
X X X X X
जागो राम तुम्हारी सीता
पड़री दुष्ट के हाथ में ।
आओ लक्ष्मण तेरी माता
घिरी हुई उत्पात में ।
कारी बातें बचा सकेंगी
आज न लुटती लाज को,
कोरी बातें बचा न पायेंगी,
देवालय–माथ को ।
बचा सकेगी अवल अहिंसा
कभी न हिन्दुस्तान को ।।"

महाकवि प्रो० आदेश ने 'संस्कृति शिविर गीत' – में अनुकरणीय देश–प्रेम का उदाहरण प्रस्तुत किया है । प्रवासी महाकवि को अपनी मातृभूमि की जितनी याद आती है और उसके प्रेम में बहता रहता है उतना ही अपनी कार्यस्थली ट्रिनीडाड को सम्मान देता है । हिन्दी भाषा, भारतीय संगीत और भारतीय संस्कृति के प्रचार के समय ऐसे ही गीत का सामूहिक और सस्वर पाठ किया जाता है–

"मनुजत्व की विजय हो,
औ एकता अमर हो ।
ट्रिनीडाड और भारत की

मित्रता अमर हो ।
नूतन सुहास लाये,
संस्कृति शिविर हमारा ।"

सहृदय कवि जी 16 नवम्बर, 1966 को दिल्ली से ट्रिनीडाड के लिए प्रस्थान कर रहा था, तब वायुयान में मातृभूमि से आशीर्वाद के लिए काव्यात्मक रचना कर रहा था –

"तब संस्कृति का करने प्रचार
जाता हूँ माँ, सप्त सिन्धु पार
लेकर बस तेरा पुण्य नाम ।।
अन्तर में अक्षम प्रीति लिये
साहित्य और संगीत लिये
मैं रचूं कला का नवल गतम ।।
आशीर्वाद दे आज मुझे
फिर दर्शन का सौभाग्य जगे
जब लौटूं मैं कर पूर्ण काम ।।"

भावों का पूत स्वरूप और विचारों की श्रेष्ठता कवि को अपने देश के गौरव में उत्साहित करती रहती है । वह भारत माता की जय–जय करता हुआ यहाँ के आदर्श को मन में विकसित करता दूर देश जा रहा है –

"साहस का तज गृह–मोहपाश,
बैठा हूँ मैं पुलकित–उदास,
इस वायुयान में आज अभय ।।
विस्तृत करने निज भाषा को,
उड़ चला अजानी आशा को,

करके नूतन अनुभव संचय ।।
तेरा आशीष अगर होगा
नत मेरा शीष नहीं होगा
पग–पग पाऊंगा में जय ।।
चाहे मिल जाये सूर्ग–सोम,
गायेगा लेकिन रोम–रोम,
भारत–माता, हो तेरी जय ।।"

शान्ति दूत भारत अपने पड़ोसी देशों से मैत्री भाव से मिलजुल कर रहना चाहता है, किन्तु दुर्भाग्य है इसकी विपरीत स्थिति भी बनती रही है । 1965 ई० में पाकिस्तान के अनाधिकारी सीमा–प्रवेश को रोकने के लिए भारत को युद्ध करना पड़ा था । कश्मीर क्षेत्र में रहते हुए कवि प्रो० आदेश ने एक लम्बी कविता "विश्व शान्ति के लिए निवेदन" लिखकर संयुक्त राष्ट्र संघ के तत्कालीन सचिव–उद्यान्त, भारत के प्रधान मंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री और जम्मू कश्मीर के तत्कालीन राज्यपाल युवराज कर्ण सिंह को प्रेषित की गई थी ।

संदर्भिका

डॉ० किरण कुमारी गुप्ता – हिन्दी काव्य में प्रकृति चित्रण – हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, सं० 2014
गजानन मुक्तिबोध (डॉ० राजपाल शर्मा) – चांद का मुंह टेढ़ा है – एक विवेचन – अमीता प्रकाशन, चरर्वे बालान दिल्ली, 1984
गुलाब राय – काव्य और कला तथा अन्य निबंध
जयशंकर प्रसाद – कामायनी – भारती भंडार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, सं० 2010
गोस्वामी तुलसीदास – रामचरित मानस (बड़ा) – गीता प्रेस, गोरखपुर,

सं० 2035